रचनात्मक आकलन - 2

5 अंक 5

उपकरण 1: छात्रों की भागीदारी और चिंतन

पुस्तक समीक्षा – 2 (SAMP-2)

https://hamari-hindi.com

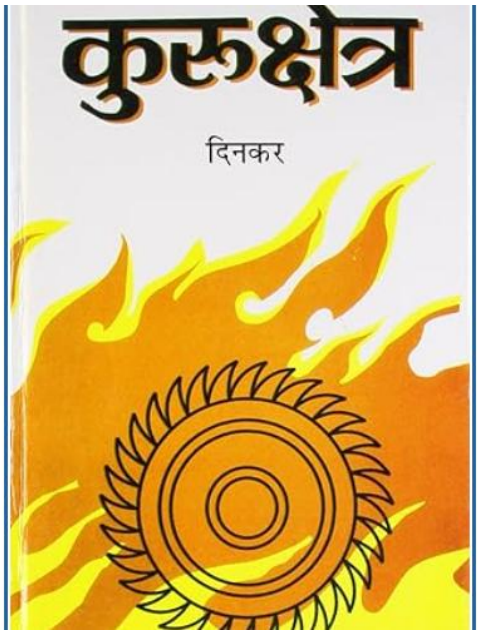

छात्र का नाम : _____

कक्षा : 10

विषय : हिंदी

पुस्तक का नाम : कुरुक्षेत्र

लेखक : रामधारी सिंह दिनकर जी

पृष्ठ : 220

पब्लिशर : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

समीक्षा: "कुरुक्षेत्र" हिंदी के राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की श्रेष्ठतम कृतियों में से एक है। दिनकर ने महाभारत के युद्ध को प्रतीक बनाकर आधुनिक युग की हिंसा, नैतिकता और शांति पर गहन विचार प्रस्तुत किया। दिनकर जी "कुरुक्षेत्र" के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि सच्चा धर्म वह है जो मानवता की रक्षा करें और युद्ध का उद्देश्य केवल विनाश नहीं, न्याय की स्थापना होनी चाहिए। यह रचना आज भी हमें शांति, नीति और करुणा के मूल्यों की याद दिलाती है।

निष्कर्ष: "कुरुक्षेत्र" सिर्फ एक काव्य नहीं, बल्कि एक **युग-दर्शन** है— जहाँ दिनकर ने युद्ध की विभीषिका के बीच भी **शांति और मानवता की लौ** जलाए रखी। यह कृति आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उसके लिखे जाने के समय थी।

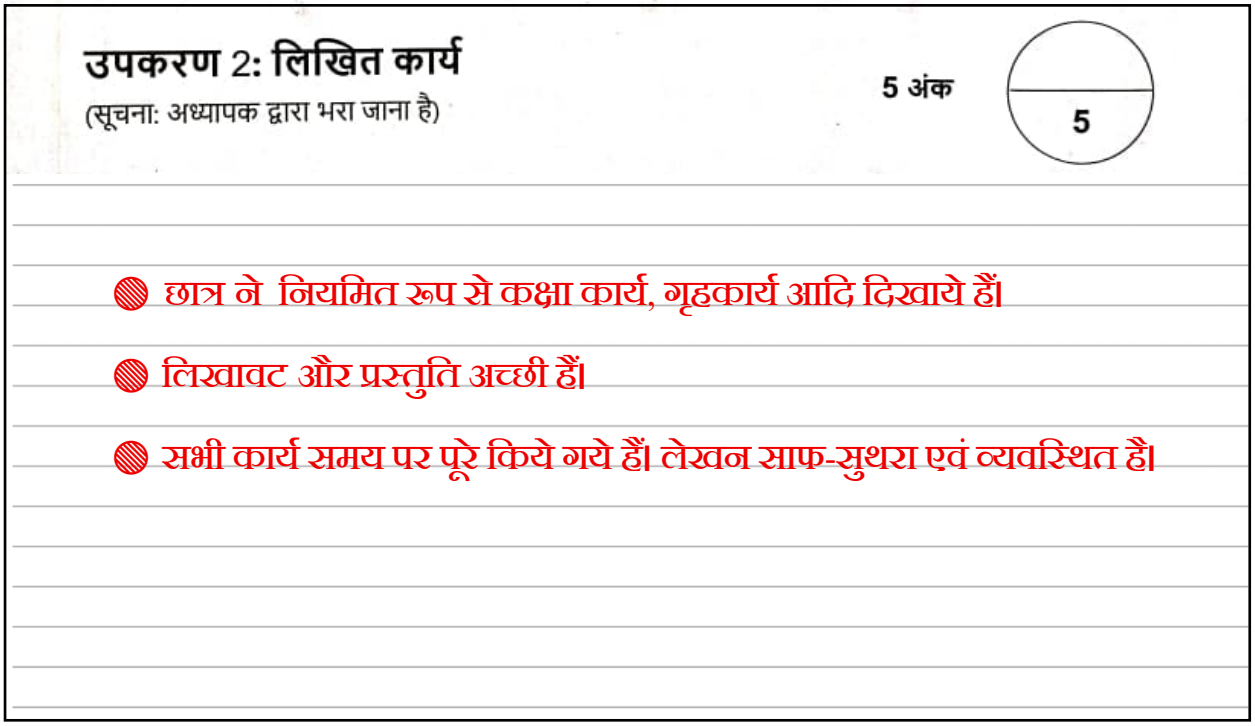

उपकरण 2: लिखित कार्य

(सूचना: अध्यापक द्वारा भरा जाना है)

5 अंक | 5

- छात्र ने नियमित रूप से कक्षा कार्य, गृहकार्य आदि दिखाये हैं।
- लिखावट और प्रस्तुति अच्छी हैं।
- सभी कार्य समय पर पूरे किये गये हैं। लेखन साफ-सुथरा एवं व्यवस्थित है।

इस स्थान पर, शिक्षक मूल्यांकन करते समय छात्र के लिखित कार्य के आधार पर संक्षिप्त टिप्पणी (remarks) लिख सकते हैं। नीचे कुछ **उदाहरण टिप्पणियाँ** दी जा रही हैं जो उस बॉक्स में लिखी जा सकती हैं।

☑ पूर्णांक (5/5) मिलने पर:

- छात्र ने नियमित रूप से कक्षा कार्य व गृहकार्य प्रस्तुत किया है। कार्य सुव्यवस्थित व सुंदर है।
- सभी कार्य समय पर पूरे किये गये हैं। लेखन साफ-सुथरा एवं व्यवस्थित है।
- नियमितता एवं सजगता सराहनीय है।

☑ यदि 4/5 मिलने पर:

- अधिकांश कार्य समय पर किए गये हैं, किंतु कुछ सुधार की आवश्यकता है।
- लेखन अच्छा है, परंतु कार्य में थोड़ी और नियमितता अपेक्षित है।

☑ 3/5 या कम अंक मिलने पर:

- कार्य में अनियमितता रही है, गृहकार्य अधूरा है। सुधार की आवश्यकता है।
- लेखन ठीक नहीं है, ध्यान देने की आवश्यकता है।
- कार्य समय पर नहीं प्रस्तुत किया गया है। नियमित अभ्यास आवश्यक है।

उपकरण 3: परियोजना कार्य

5 अंक 5

https://hamari-hindi.com

छात्र का नाम	:
कक्षा	: 10
विषय	: हिंदी
पाठ का नाम	: स्वराज्य की नींव
परियोजना कार्य की संख्या	: 2 (SAMP-2)
कार्य का आवंटन	: सामूहिक / वैयक्तिक
उपकरण	: ग्रंथालय पुस्तक, पेंसिल, रबड, स्केचपेन्स, रंगीन चार्ट आदि।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के बारे में अतिरिक्त जानकारी एकत्र कीजिए।

https://hamari-hindi.com

परिचय: भारत के स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम साहस, बलिदान और देशभक्ति के प्रतीक के रूप में अमर है। उनका जन्म 19 नवम्बर 1828 को वाराणसी में हुआ था। बचपन में उन्हें मणिकर्णिका कहा जाता था और प्यार से 'मनु' बुलाया जाता था। वे बचपन से ही निर्भीक और वीरांगना थीं।

विश्लेषण : रानी लक्ष्मीबाई ने छोटी उम्र में घुड़सवारी, तलवारबाज़ी और युद्धकला में दक्षता प्राप्त की। उनका विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से हुआ। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने अंग्रेज़ों के खिलाफ़ वीरता से युद्ध किया। उनका नारा था — "मैं अपनी झांसी नहीं दूँगी।" उन्होंने अपने पुत्र को पीठ पर बाँधकर दुश्मनों से संघर्ष किया और मातृभूमि के लिए प्राण न्यौछावर किए।

उपसंहार : रानी लक्ष्मीबाई भारत की अमर वीरांगना थीं। उनके साहस और देशभक्ति, भारतीयों के हृदय में स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित की। वे सदैव भारत की बेटियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगी।

https://hamari-hindi.com